

## वैश्वीकरण में शैक्षिक स्थिति

रंजना

शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग  
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

डॉ. आदित्य नारायण चौधरी

सहायक प्राध्यापक, शिक्षा शास्त्र विभाग,  
बी.एम.ए. कॉलेज, बहोड़ी

### सार

आज के आधुनिक कॉर्पोरेट माहौल में वैश्वीकरण नामक एक धारणा है जो पूरे विश्व को एक चक्र या केंद्र में बदलने के लक्ष्य की दिशा में काम कर रही है। वैश्विक गांव के विचार को साकार करने के अंतिम लक्ष्य के साथ, बढ़ते वैश्वीकरण की प्रक्रिया का समाज के हर पहलू पर प्रभाव पड़ा है। इस शोध पत्र का प्राथमिक उद्देश्य यह जांच करना है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया का शिक्षा उद्योग पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है या नहीं, जिसे अक्सर किसी भी सभ्यता का सबसे आवश्यक घटक माना जाता है। वैश्विक अर्थव्यवस्था वैश्वीकरण प्रक्रिया के केंद्र में है।

**प्रमुख शब्द:** वैश्वीकरण, शैक्षिक

### प्रस्तावना-

वैश्वीकरण एक विश्वव्यापी प्रक्रिया है। वैश्वीकरण वर्तमान समय के व्यापारिक माहौल की एक ऐसी अवधारणा है जो पूरे विश्व को एक मण्डल अथवा केन्द्र बनाने की ओर अग्रसर है। वैश्विक ग्राम की संकल्पना को साकार करने का लक्ष्य लेकर बढ़ती वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। इस शोध पत्र में अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह है कि वैश्वीकरण के प्रक्रिया ने समाज के सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र शिक्षा को व्यापक रूप से प्रभावित है। वैश्वीकरण मूलतः एक आर्थिक प्रक्रिया है। क्योंकि वर्तमान समय में बाजार की नितियों सभी स्थानों पर लागू होती है। चाहे वह शिक्षा ही क्यों न हो। अतः वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने शिक्षा के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों रूपों प्रभावित किया है।

वैश्वीकरण की नकारात्मक प्रवृत्ति के अन्तर्गत निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते हैं। वैश्वीकरण के कारण शिक्षा में आर्थिकायन की प्रवृत्ति बढ़ी है। शिक्षा एक बाजार की विषयवस्तु बनकर रह गयी है। इसको उत्पादकता से जोड़कर देखा जाने लगा है। देश के छात्रों को संसाधन एवं उत्पाद के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा है। शिक्षा के उद्देश्यों में भौतिक समृद्धि को सर्वोपरि रखा जाने लगा है। पाठ्यक्रम में केवल विज्ञान एवं तकनीकी विषयवस्तु का समावेश है। अध्यात्म, धर्म व नैतिकता का स्थान दिन-प्रतिदिन कम होता जा रहा जो शिक्षाशास्त्रीयों को नये चिन्तन की तरफ अग्रसर हो गया है। शिक्षा आम व्यक्ति व निम्न वर्ग की पहुँच से दूर व सामाजिक व क्षेत्रीय विपमता को बढ़ावा देने वाली बन रही है। तथा विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता व असंतोष को बढ़ावा मिल रहा है। वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों में पाश्चात्यीकरण व आधुनिकीकरण की प्रवृत्ति के अनुसार को बल मिला है। जिसमें विद्यार्थियों में नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का पतन एवं सांस्कृतिक बास हुआ है वर्तमान परिदृश्य में बढ़ते हुए सामाजिक वैमनस्य, वर्ग भेद सामाजिक स्तरीकरण के बदलते स्वरूप में आज भी फिर से शिक्षा में वर्गहीन समतामूलक व बौद्धिक समाज को स्थापित करने के लिए वेदान्त दर्शन की अध्ययन की प्रासंगिकता महत्वपूर्ण हो गयी है।

वर्तमान शिक्षा के वैश्वीकरण के प्रभाव से उद्देश्यहीनता की शिकार है। छात्रों को अपने गन्तव्य का ही ज्ञान नहीं है। अतः छात्रों में उनका कर्तव्य पथ आलोकित करने के लिए " सा विद्या या विमुक्तये" जैसे उच्च आदर्श को शिक्षा के लक्ष्य के रूप में स्थापित किया जाना होगा।

वर्तमान शैक्षिक वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में तकनीकी एवं वैज्ञानिक शिक्षा को आवश्यकता से अधिक बल मिला है। निःसंदेह यह व्यक्ति एवं समाज के भौतिक उन्नयन हेतु आवश्यक है। अतः इस शोध पत्र के निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है दर्शन आधारित शिक्षा भी वैश्वीकरण की संकल्पना को कहीं न कहीं प्रभावित किया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में प्राचीन एवं आधुनिकता का अद्भुत समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है। भारतीय शिक्षा अर्थात् शैक्षिक वैश्वीकरण को शोध कार्य का अभिन्न अंग बनाया गया है शैक्षिक वैश्वीकरण की प्रक्रिया को शिक्षा में अधिक समुन्नत व्यवहारिक व प्रायोगिक बनाया गया है।

वैश्वीकरण एवं शिक्षा के इस शोध पल में एक ऐसी नवीन चिन्तन धारा के विकसित करने का प्रयास किया गया है जो शिक्षार्थियों को वैश्वीकरण के शिक्षा पर प्रभाव व इसके द्वारा उदित शैक्षिक विसंगतियों के निराकरण में वैश्वीकरण की भूमिका का पुनर्विवेचन करने को प्रेरित करेगी।

इस शोध पत्र को सारगर्भित रूप में यदि हम कहें तो भारतीय दर्शन की अभेद दृष्टि विभिन्नता में एकता व्यक्तित्व रूपान्तरण (पाशविकता से मानवीयता की ओर) व्यक्ति की गरिमा का आदर समष्टि दृष्टि वसुधैव कुटुम्बकम् सर्वे भवन्तु सुखिनः विश्व प्रेम आदि ऐसे सिद्धान्त हैं जिसका प्रयोग यदि आधुनिक भारतीय शिक्षा में किया जाय तो वह दिन दूर नहीं जब भारत विश्व स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका में शिक्षा का प्रतिनिधि करेगा।

वेदान्त दर्शन प्रत्येक प्राणी मात्र के कल्याण हेतु कृत संकल्पित है यह दर्शन मानता है कि सभी जीवों में एक ही ईश्वर का वास है इसने ही संस्कृति में प्रेम एकता उदारता सहानुभूति एवं विश्व दृष्टि को बढ़ावा दिया है। इसमें वैश्वीकरण के दौर में शैक्षिक स्थिति अनवरत इस सम्पूर्ण शोध अध्ययन में "वैश्वीकरण और वेदान्त दर्शन आधारित शिक्षा की संकल्पना" समृद्धि, समुन्नत प्रगतिशील व उपादेय बनाने हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये चजा सकते हैं। को अधिक शिक्षा के वैश्वीकरण की प्रक्रिया को वसुधैव कुटुम्बकम् एवं सर्वे भवन्तु सुखिनः की अंतः प्रेरणा से अनुप्राणित किया जाय।

वैश्वीकरण शिक्षा को इस प्रकार विकसित किया जाए कि इससे परस्पर सद्भावना भातृत्व एवं सहयोग का विकास हो। शिक्षा में अधिक से अधिक जनतांत्रिक भावना का समावेश हो क्योंकि शैक्षिक वैश्वीकरण हेतु जनतंत्र सर्वोत्तम प्रणाली है। शिक्षा ऐसी हो जो आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक सांस्कृतिक नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास करने हेतु सक्षम हो। राष्ट्रीयता की शिक्षा के साथ-साथ विश्व बन्धुत्व की भावना व अन्तराष्ट्रीय अवबोध की भावना का विकास हो। शिक्षा का गन्तव्य मानव कल्याण अर्थात् सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयः है। वैश्विक शिक्षा के अन्तर्गत मूल शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा को अनिवार्य किया जाय वैश्विक शिक्षा की संकल्पना को मूर्त रूप प्रदान किया जा सके।

## भारतीय शिक्षा-

भारत में सरकार द्वारा 90 के दशक में देश को आर्थिक संकट से निकालने के लिए तथा विकास की गति तीव्र करने के लिए नीतिगत आर्थिक सुधारों को लागू किया गया। आर्थिक सुधारों की यह क्रिया आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण (एल0 पी0 जी0) व मुक्त बाजार व्यवस्था पर आधारित है। भारत में सन् 1991 में नई आर्थिक नीति की घोषणा के साथ ही वैश्वीकरण की शुरुआत की औपचारिक घोषणा हुई जबकि इसका सूत्रपात 1980 के दशक में ही हो चुका था। 1986 की नई शिक्षा नीति ने समान स्कूल प्रणाली के स्थान पर बहुआयामी शिक्षा व्यवस्था स्थापित करने की वैधानिक घोषणा कर दी थी जिसने सन् 1990 के दशक में वैश्वीकरण के बाजार की ताकतों को शिक्षा के निजीकरण व बाजारीकरण का धरातल प्रदान किया। सन् 1991 में

घोषित नई आर्थिक नीति के बाद वैश्विक बाजार का प्रतिनिधित्व करने वाली दो शक्तिशाली संस्थाओं अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष एवं विश्व बैंक ने भारत के सामने ऋण तथा अनुदान देने के लिए शर्तें रखी जिसमें सरकार के लिए शिक्षा, चिकित्सा व अन्य समाज कल्याणकारी कार्यक्रमों को कम करने का प्रस्ताव किया गया जिसके फलस्वरूप शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्रों में सरकारी निवेश को पूर्णतया समाप्त कर इनको निजी क्षेत्र में सौंपने की प्रक्रिया चल रही है।

सन् 1991 में अर्थव्यवस्था में उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण की शुरुआत के साथ ही उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी इन नीतियों को लागू किया गया। फलस्वरूप सन् 1991 में जहां भारतीय विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में 41-42 लाख छात्र-छात्राएं अध्ययनरत थे, सन् 2012-13 में इनकी संख्या लगभग 1 करोड़ 80 लाख हो गई जिसमें 21 लाख परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत थे। यू0 जी0 सी0 की वार्षिक रिपोर्ट 2012-13 के अनुसार, स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत में विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों की संख्या क्रमशः मात्र 20 तथा 500 थी जो 2013 तक बढ़कर क्रमशः 651 तथा 35500 हो चुकी है। आज भारत में विश्वविद्यालयी शिक्षा में सकल पंजीकरण अनुपात (जी0 ई0 आर0) 20 प्रतिशत है जबकि विश्व स्तर पर औसत 26 प्रतिशत तथा विकसित देशों का औसत 58 प्रतिशत है। सरकार ने सन् 2020 तक इसे 30 प्रतिशत करने का लक्ष्य रखा है। चूंकि लक्ष्य लक्षित उम्र समूह के 30 प्रतिशत युवाओं को स्नातक बनाने का है, उच्च शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु अनेक महत्वाकांक्षी योजनाएं प्रस्तावित हैं जिनमें अधिकाधिक नये विश्वविद्यालय और महाविद्यालय खोले जाना प्रमुख है। भारत में शिक्षा के तीव्र प्रसार की आवश्यकता और सीमित सरकारी संसाधनों को दृष्टिगत रखते हुए राष्ट्रीय ज्ञान आयोग 2009 ने निजीकरण की प्रक्रिया का समर्थन करते हुए कहा था कि “आज देश में 1500 नये विश्वविद्यालयों की आवश्यकता है। उच्चतर शिक्षा के अवसरों का दायरा बढ़ाने के लिए उसमें निजी निवेश को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।” परंतु मात्रात्मक वृद्धि की इस दौड़ में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता कहां है? संख्या की दृष्टि से देखा जाए तो भारत की उच्चतर शिक्षा व्यवस्था अमरीका और चीन के बाद तीसरे नंबर पर आती है लेकिन जहाँ तक गुणवत्ता की बात है, दुनिया के शीर्ष 200 विश्वविद्यालयों में भारत का एक भी विश्वविद्यालय नहीं है। स्कूल की पढाई करने वाले नौ छात्रों में से एक ही कॉलेज पहुँच पाता है। भारत में उच्च शिक्षा के लिए रजिस्ट्रेशन कराने वाले छात्रों का अनुपात दुनिया में सबसे कम यानी सिर्फ 11 फीसदी है। अमरीका में ये अनुपात 83 फीसदी है। हाल ही में नैसकॉम और मैकिन्से के शोध के अनुसार मानविकी में 10 में से एक और इंजीनियरिंग में डिग्री ले चुके चार में से एक भारतीय छात्र ही नौकरी पाने के योग्य हैं। योजना आयोग की भी स्वीकारोक्ति है कि मात्र 18 प्रतिशत स्नातक ही रोजगार पा सकने के योग्य हैं। राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद की रिपोर्ट में स्वीकार किया गया है कि लगभग 70 प्रतिशत विश्वविद्यालय और 90 प्रतिशत महाविद्यालय औसत अथवा औसत से भी कम दर्जे के हैं। भारतीय छात्र विदेशी विश्वविद्यालयों में पढ़ने के लिए हर साल सात अरब डॉलर यानी करीब 43 हजार करोड़ रुपए खर्च करते हैं क्योंकि भारतीय विश्वविद्यालयों में पढाई का स्तर घटिया है। इसलिए शिक्षा का निजीकरण करने के साथ ही इस बात पर ध्यान देना आवश्यक है कि शिक्षा के प्रसार से उसकी गुणवत्ता प्रभावित न हो। आज गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कठोर नियम बनाए जाने एवं उसको सख्ती से लागू किए जाने की आवश्यकता है।

## वैश्वीकरण के युग में शिक्षक की भूमिका-

वैश्वीकरण के कारण देश में आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक व सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में परिवर्तन हुआ है। इन परिवर्तनों ने हमारे शिक्षांत्र को अत्यधिक प्रभावित किया है। इसी क्रम में शिक्षक व छात्र की भूमिका में भी बदलाव आना निश्चित है। आज से लगभग ढाई दशक पूर्व विद्यार्थी के ज्ञान पिपासा को जाग्रत करने व शांत करने का मुख्य आधार शिक्षक था। उस समय विद्यार्थी अक्षरीय एवं पुस्तकीय ज्ञान के लिए शिक्षक पर निर्भर होते थे। तत्कालीन समय में बहुत कम विद्यार्थियों के पास टेलीवीजन, रेडियो, समाचारपत्र एवं पत्रिकाएं उपलब्ध हो पाती थी। विद्यार्थियों के पास कल्पनाएं, जिज्ञासाएं व प्रश्नों की भरमार होती थी, लेकिन उसके पास समाधान का एकमात्र स्रोत शिक्षक था जो अपने अनुभवों के आधार पर उनकी जिज्ञासा

को शांत करता था। लेकिन आज शिक्षक की भूमिका में महत्वपूर्ण परिवर्तन आ गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में शिक्षक की बदलती भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा गया है- “उसे अब तक ज्ञान के स्रोत के रूप में केंद्रीय स्थान मिलता रहा है, वह सीखने-सिखाने की समूची प्रक्रिया का संरक्षक और प्रबंधक रहा है और पाठ्यचर्या या अन्य विभागीय आदेशों के जरिए सुपुर्द शैक्षणिक और प्रशासनिक जिम्मेदारियों को पूरा करने वाला रहा है। अब उसकी भूमिका ज्ञान के स्रोत के बदले एक सहायक की होगी जो सूचना को ज्ञान या बोध में बदलने की प्रक्रिया में विविध उपायों से शिक्षार्थियों को उनके शैक्षणिक लक्ष्यों की पूर्ति में मदद करे।”

शिक्षा के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग ने शिक्षा की परम्परागत प्रणाली में अत्यधिक परिवर्तन ला दिया है। आज शिक्षा में सूचना सम्प्रेषण तकनीकी के सशक्त माध्यमों जैसे रेडियो, दूरदर्शन, टेपरिकार्डर, वीडियोरिकार्डर, टेलीफोन, मोबाइल, कम्प्यूटर, सीडीरोम, उपग्रह संप्रेषण, ई-मेल, इण्टरनेट आदि का सीखने की प्रक्रिया में सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा रहा है। शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र व अंग को सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग ने प्रभावित किया है, प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा में रेडियो, दूरदर्शन, टेपरिकार्डर, वीडियोरिकार्डर, आदि का शिक्षण में उपयोग किया जा रहा है। रेडियो तथा दूरदर्शन पर विभिन्न विषयों के शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है, जिससे सुदूर क्षेत्रों में रह रहे लाखों विद्यार्थी घर पर शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। एन0सी0ई0आर0टी0, दिल्ली एवं एस0सी0ई0आर0टी0 द्वारा इस दिशा में उल्लेखनीय प्रयास किए गए हैं। इसके अतिरिक्त इन विद्यालयों में कम्प्यूटर का प्रयोग बच्चों को सूचना प्रौद्योगिकी की शिक्षा देने, बच्चों की उपस्थित, शुल्क तथा छात्रवृत्ति का ब्यौरा रखने में एवं परीक्षण प्रश्नों के निर्माण में किया जा रहा है। उच्च शिक्षा में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग ने शिक्षा की परम्परागत प्रणाली में अत्यधिक परिवर्तन ला दिया है। यह शिक्षक के सर्वाधिक मददगार के रूप में उभरी है। सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षक को अपने ज्ञान को अद्यतन बनाए रखने में, पाठयोजना तैयार करने में, विद्यार्थियों के विभिन्न अभिलेख बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। आज शिक्षक पावर प्वाइन्ट प्रेजेंटेशन के माध्यम से मल्टीमीडिया का प्रयोग कक्षा शिक्षण में विषय वस्तु को रूचिकर, सहज एवं सुग्राह्य बनाने में कर रहा है। इसके अतिरिक्त विद्वान शिक्षकों के व्याख्यानो को इण्टरनेट के द्वारा छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है जिससे सुदूर क्षेत्रों में अध्ययनरत छात्र भी विषय विशेषज्ञों के ज्ञान से परिचित हो जाता है। विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी के अत्यधिक समृद्ध साधनों ने व्यक्तिगत जीवन तथा व्यावसायिक जीवन दोनों को जटिल बना दिया है। कक्षाध्यापन में कम्प्यूटर, टेपरिकार्डर एवं अन्य इलेक्ट्रॉनिक साधनों का उपयोग करने, हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर को अपनाने जैसे दायित्व बढ़ गए हैं। इससे शिक्षकों में नए कौशल लाने की आवश्यकता बढ़ गई है। अतएव शिक्षकों के प्रशिक्षण में इन बिंदुओं को शामिल किए जाने की जरूरत है।

एन0सी0टी0ई0 ने शिक्षक प्रशिक्षण के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में सूचना प्रौद्योगिकी को स्वीकार किया और इसके लिए एक सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक घटकों से युक्त एक कार्यक्रम बनाया जिसके माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षणार्थी मल्टीमीडिया के प्रयोग से पाठयोजना तैयार कर सकते हैं, ऑनलाइन और ऑफलाइन स्रोतों से अपना दत्तकार्य (एसाइनमेंट) बना सकते हैं, विद्यार्थियों के अभिलेख तैयार कर सकते हैं। इसके अलावा सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षकों को सूचनाओं के नवीनीकरण में, शिक्षक दक्षता विकसित करने में, नयी-नयी शिक्षण विधियों एवं माडल की जानकारी प्रदान करने में, निर्देशात्मक तत्वों के प्रयोग में तथा अनुसंधान दक्षता विकसित करने में सहायता प्रदान करता है। शिक्षकों को सूचना प्रौद्योगिकी का ज्ञान प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा एकेडमिक स्टाफ कालेजों में सूचना संचार प्रौद्योगिकी विषय पर रिक्रेशर कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। साथ ही सभी ओरियन्टेशन व रिक्रेशर कार्यक्रमों में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रशिक्षण को अनिवार्य रूप से शामिल कर दिया गया है ताकि शिक्षक अपने ज्ञान को अद्यतन एवं विस्तृत आयाम देकर शिक्षण व अनुसंधान कार्य को उन्नत बना सकें। निःसंदेह सूचना प्रौद्योगिकी का ज्ञान रखने वाला शिक्षक ही वैश्वीकरण के इस युग में शिक्षार्थियों की आकांक्षाओं पर खरा उतर पायेगा।

वर्तमान वैश्वीकरण के युग में उच्च शिक्षा की विषयवस्तु, अध्यापन आवश्यकताएं तथा अध्यापकीय दृष्टिकोण सभी बदल गए हैं। इसलिए उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में भी अत्यधिक परिवर्तन दृष्टिगत हो रहा है। आज मानविकी विषयों के स्थान पर विविध आयामी व्यावसायिक पाठ्यक्रमों पर बल दिया जा रहा है। इसलिए उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में ऊर्जा संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण एवं बचाव, जनसंख्या शिक्षा, रोग मुक्ति व रोग नियंत्रण के उपाय, सकारात्मक मूल्यों का विकास, कौशल विकास, मानवाधिकार, शांति शिक्षा, कम्प्यूटर से लेकर अंतरिक्ष विज्ञान तक, समुद्र के गर्भ से लेकर वास्तुशास्त्र, खनिजशास्त्र तक आदि नवीन विषयों का समावेश किया जा रहा है। पाठ्यक्रमों में आए इस परिवर्तन को विद्यालय में प्रभावकारी ढंग से लागू करना शिक्षकों के लिए एक बड़ी चुनौती है जिसके लिए उन्हें अपनी दक्षता में वृद्धि करनी होगी और इसके लिए उन्हें सशक्त बनना होगा।

वर्तमान वैश्वीकरण के युग में उच्च शिक्षा की शिक्षण विधियों में भी परिवर्तन दृष्टिगत हो रहा है। आज परम्परागत शिक्षण विधियों के स्थान पर नवीन विधियों के द्वारा विद्यार्थी को स्व अधिगम (सेल्फ लर्निंग) के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी की सक्रिय भागीदारी होती है और उन्हें सहयोग द्वारा सीखने के लिए वांछित वातावरण प्रदान किया जाता है। आज व्याख्यान पद्धति के साथ-साथ सेमिनार, ग्रुप डिस्कशन, कोपरेटिव लर्निंग, वर्कशाप, ट्यूटोरियल, ब्रेन स्टार्मिंग, एक्सटेम्पोर आदि का प्रयोग शिक्षण में किया जा रहा है। इन नवीन विधियों को शिक्षक प्रशिक्षण की पाठ्यचर्या में अनिवार्य रूप से शामिल करने की आवश्यकता है ताकि शिक्षक इन नवाचारों से अवगत हो सकें।

आज वैश्वीकरण के प्रभाव में शिक्षा और समाज दोनों के क्षेत्र में बदलाव आ गया है। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षक आयोग (1996) के अध्यक्ष जे0 डेलर्स व सहयोगियों के अनुसार, शिक्षा के चार स्तम्भ 'ज्ञान के लिए शिक्षा, कार्य के लिए शिक्षा, सह-अस्तित्व की शिक्षा तथा स्व-अस्तित्व की शिक्षा है।' इन चारों स्तम्भों को पूर्ण करने के लिए शिक्षा प्रणाली में सुधार अवश्यभावी है। अतः शिक्षक को छात्रों को स्वाध्याय और विवेकशील चिंतक बनाने के लिए प्रेरित करना होगा और शिक्षक को स्वयं विवेकशील व शोधार्थी बनने की दक्षता प्राप्त करनी होगी।

वैश्वीकरण के फलस्वरूप देश में तीव्र औद्योगिक विकास हुआ है। आज लोग रोजगार व बेहतर जीवन की तलाश में गांव से शहर की ओर पलायन कर रहे हैं। ऐसे में संयुक्त परिवार बिखर कर एकल परिवारों में परिवर्तित हो गए जिसमें माता, पिता तथा बच्चे रह गए। ऐसे परिवेश का सर्वाधिक प्रभाव बच्चों पर पड़ा। बच्चे जो मूलतः निष्कपट, सरल हृदय, सच्चे, ईमानदार व विश्वसनीय होते थे, इस बदले हुए महानगरीय तथा शहरी परिवेश में आकर तेजी से बदलने लगे। बच्चे की प्रथम पाठशाला परिवार तथा प्रथम गुरु माता होती थी। बढ़ती आवश्यकताओं के कारण पति-पत्नी दोनों को कमाने के लिए घर से बाहर निकलना पड़ा। इस एकल पारिवारिक व्यवस्था में बालक न केवल बाबा, दादी, चाचा ताऊ के प्यार से वंचित हो गया है, बल्कि कुछ हद तक मां-बाप के स्नेह से भी वंचित रहने लगा है। आज अभिभावकों के पास बच्चों के लिए समय नहीं है। बच्चों के मन में उठने वाले प्रश्नों व जिज्ञासाओं का उत्तर देने वाला, भावनाओं को सहेजने वाला कोई नहीं है। फलस्वरूप संयुक्त परिवार में मिलने वाले मानवीय मूल्यों, आदर्शों तथा संस्कारों से वे वंचित हो गए हैं जिसके कारण आज बालकों में बचपना, भोलापन, सहजता, सरलता, चंचलता, निश्चलता, सहनशीलता तथा सहकारिता जैसे मानवीय भाव लुप्त होते जा रहे हैं तथा उनमें उग्रता, अशांति, अवसाद, लालच, क्रोध आदि दृष्टिगत हो रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में, जब परिवार का साथ व स्नेह बालकों को नहीं मिल पा रहा है, शिक्षक का महत्व व भूमिका बढ़ जाती है।

यहां पर शिक्षक ही एकमात्र विकल्प है जो उनकी भावनाओं, प्रश्नों व विचारों की धाराओं को संस्कारों का बांध बनाकर उचित दिशा दे सकता है। ऐसा माना जाता है कि अध्यापक वर्ग अभिभावकों की तुलना में अधिक मान्य होता है। इसलिए अध्यापक का साथ विद्यार्थी को न केवल पढ़ाई पूरी करने में, बल्कि अच्छी आदतों व गुणों का विकास करने में भी अति आवश्यक है।

उदारिकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण एवं विश्व व्यापार संगठन सिर्फ आर्थिक एवं शैक्षिक तत्व नहीं हैं, वरन् वे सांस्कृतिक परिणाम भी उत्पन्न करते हैं। सामान के साथ ज्ञान, शिक्षा व विशेषज्ञता, संस्कृति, विचार एवं विचारधाराएं भी आयात होते हैं और

सांस्कृतिक प्रदूषण प्रारम्भ हो जाता है। मादक व्यसन और उपभोक्तावादिता महामारी की तरह फैली है और युवा चाहें शिक्षित हों या अशिक्षित, इसके सबसे बुरी तरह शिकार हो रहे हैं। व्यवहार के तरीके, मूल्य, पहनावा, उपभोग के तरीके एवं पारिवारिक जीवन की गुणवत्ता द्रुतगति से न्यूनता प्रदर्शित कर रही है। भारतीय सांस्कृतिक माहौल और इसकी सांस्कृतिक विरासत आक्रमणग्रस्त है। भारत की विशिष्ट पहचान का परिरक्षण एक विशालकाय कठिन कार्य माना गया है। यदि भारतीयता अथवा इसकी संस्कृति को इन स्थितियों में बने रहना है तो सुनियोजित, गहन विचारित एवं गम्भीर शैक्षिक प्रयासों की जरूरत है जिसके लिए गुणात्मक रूप से समृद्ध एवं सार्थक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों की आवश्यकता है जिसके द्वारा ऐसे शिक्षक तैयार हों, जो भारतीय पहचान व संस्कृति को अक्षुण्ण रख सकें।

वर्तमान वैश्वीकरण के युग में सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव के कारण एक देश की घटनाएं अन्य देशों को भी प्रभावित करती हैं जिसके कारण अनेक तानाशाह पदच्युत हो चुके हैं और वहां पर लोकतंत्र की स्थापना हो गयी है। आज जब सारा विश्व लोकतंत्र की दुहाई दे रहा है, ऐसे में शिक्षकों को अपना एकतंत्रीय व्यवहार छोड़ना पड़ेगा। घर जब सहकारी वातावरण देने में असमर्थ होने लगे हैं तब विद्यालयों की जिम्मेदारी सहकारिता बढ़ाने में और अधिक हो जाती है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में कहा गया है- “शिक्षा के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है, हमारे सहभागिता आधारित लोकतंत्र व संविधान में प्रतिस्थापित मूल्यों को सुदृढ़ करना।” आज शिक्षक विद्यालय में लोकतन्त्र के मूल तत्वों स्वतन्त्रता, समानता, भ्रातृत्व, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता को बढ़ावा देकर लोकतन्त्रीय भावना का विकास करने का महत्वपूर्ण कार्य करने में विशिष्ट भूमिका का निर्वाह कर सकता है।

आज विश्व एक गांव का रूप ले रहा है। संस्कृतियों में तेजी से संक्रमण हो रहा है। ऐसे में शिक्षक की अपनी भूमिका और भी अधिक संवेदनशील हो जाती है। शिक्षक का कार्य वास्तव में अन्य कार्यों से अधिक महत्वपूर्ण और चुनौतीभरा है क्योंकि उसे भावी नागरिकों का निर्माण करना है, उस पीढ़ी का निर्माण करना है, जो संस्कृति की संवाहक होगी। आज शिक्षक को पारम्परिक शिक्षण के स्थान पर नवाचार की ओर उन्मुख होना पड़ेगा। सूचना प्रौद्योगिकी व नवीन शिक्षण तकनीकों की जानकारी प्राप्त करने के साथ ही शिक्षक को मूल्यों का संरक्षण करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करना होगा। ऐसे दक्ष व नवाचारी शिक्षक के द्वारा ही उच्च शिक्षा की वैश्विक चुनौतियों का सामना कर पाना सम्भव हो सकेगा। यदि शिक्षकों को उचित संसाधन, नवाचारों व उपयुक्त प्रशिक्षण के द्वारा सशक्त कर दिया जाए तो निःसंदेह भारत के विश्वविद्यालय विश्व की रैंकिंग में उच्च स्थान प्राप्त कर सकेंगे और उच्च शिक्षा के लिए छात्रों को विदेश जाने की जरूरत नहीं होगी वरन् विदेशी छात्र भारत में अध्ययन करने के लिए आयेंगे जिससे भारत आर्थिक रूप से समृद्ध हो सकेगा एवं नालंदा के समय की तरह भारत एक बार पुनः विश्व गुरु बनकर विश्व को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करेगा।

## निष्कर्ष-

उदारीकरण और निजीकरण वैश्वीकरण के विकास के प्रमुख तत्व उभरकर सामने आते हैं। जो सम्पूर्ण विश्व जगत के विचारों को प्रभावित करते हैं। वर्तमान कालीन स्थिति शैक्षिक स्थिति के भी प्रभावित कर रहे हैं। सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को वैश्वीकरण ने प्रभावित किया है जिसमें मानव के विचारों में वैश्विक क्रान्ती आयी है। अध्ययनरत लोगों में गतिशीलता, समझौता, वाद-विवाद, अनुनय, संगठन और नेतृत्व और प्रबन्धन कौशल विकसित करने की आवश्यकता है बढ़ावा दिया है। भिन्न-भिन्न देशों के बीच विभिन्न स्तरों पर संचार कान्ती को प्रोत्साहित किया है। इस प्रकार वैश्वीकरण ने शिक्षा व्यवस्था के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, अनुशासन, कौशल इत्यादि सभी को प्रभावित किया है जो नये युग की चेतना को प्रोत्साहित करने में प्रयत्नशील है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- [1] एम0एच0आर0डी0 (1986-1992), नेशनल पालिसी आन एजुकेशन, नई दिल्ली
- [2] दोसी, प्रवीण (2011), भारतीय शिक्षा के माध्यम से सामान्य एकता, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शान्ति समरसता उदयपुर 26-27 मार्च, 2011
- [3] ब्रेमेल्ड थियोडोर (1975), शिक्षा की दार्शनिक प्रजातियाँ सांस्कृति परिप्रेक्ष्य - राजस्थान, जयपुर
- [4] वैश्वीकरण और शिक्षा की चुनौतियाँ - अमर उजाला, दैनिक समाचार पत्र दिनांक 21 जनवरी 2016, सम्पादकीय, पृष्ठ-7 विकिपीडिया, इंटरनेट साइट
- [5] शिक्षक अभिव्यक्ति (वार्षिक), अंक 3-4, 2004-05
- [6] राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, एन0सी0ई0 आर0 टी0 नई दिल्ली, 2006
- [7] गांधी जी के शैक्षिक विचार, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली, 1999
- [8] भारतीय आधुनिक शिक्षा (त्रैमासिक) एन0सी0ई0 आर0 टी0 नई दिल्ली, जनवरी 2008
- [9] भारतीय आधुनिक शिक्षा (त्रैमासिक) एन0सी0ई0 आर0 टी0 नई दिल्ली, जुलाई 2011
- [10] अध्यापक शिक्षा के कतिपय विशिष्ट मुद्दे एवं संदर्भ, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली, 2004
- [11] उच्च शिक्षा पत्रिका (त्रैमासिक), विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली, वर्ष 6 अंक 2 ग्रीष्म 1998
- [12] आजकल पत्रिका (मासिक), प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली, नवम्बर 2009